परम पूज्य, बालयति, भावलिंगी संत आचार्य श्री 108 विमर्श सागर महामुनिराज जी की बुंदेली पूजन

(कुकुभ /ताटंक छंद)

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

स्थापना

सिंहासन पै फूल बिछा दय , नीचट भाव बनाये है।
गुरु विमर्श जी आन बिराजौ , हम पूजन खौं आये है॥
बिनतुआइ भी सबरी लगबें , पूजा मोरी स्वीकारौ।
चरनन खौं इस्थापन कर दौ ,तब मोखौ लगै सहारौ ॥

ॐ हूँ परम पूज्य आचार्य श्री 108 विमर्श सागर जी महामुनिराज , अत्र अवतर -अवतर संवोषट् आह्वाननम्
ॐ हूँ परम पूज्य आचार्य श्री 108 विमर्श सागर जी महामुनिराज , अत्र तिष्ठ- तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनम्।
ॐ हूँ परम पूज्य आचार्य श्री 108 विमर्श सागर जी महामुनिराज , अत्र मम् सन्निहितो भव -भव बषट् सन्निधिकरणम्

~~~~~~~~

जल

पानू से हम भरकै डबला , केवट बनके आये है।
चरन आपके धौकै मानें , राम अपुन से पाये है॥
पाप धुलै सब मौरे अब तो, हम खौ आस लगाने है।
गुरु विमर्श के चरनन छूकै, खुद हमखौं तर जाने है ॥

ॐ हूँ परम पूज्य आचार्य श्री 108 विमर्श सागर जी महामुनिराज चरण कमलेभ्यों , जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

~~~~~~~~

चंदन

चड़ौ जगत्तर ताप टिपिरियन , सौ हम चंदन ल्याये है।
सबइँ ताप चटपट हो जाबैं , बिनतुआइ खौं आये है॥
हौरा से हम भुँजतइ राबें , ताप जनम भर हम पाबै।
गुरु विमर्श जी हेरौ हमखौं , हम चंदन इतइँ चढ़ाबै ॥

ॐ हूँ परम पूज्य आचार्य श्री 108 विमर्श सागर जी महामुनिराज चरण कमलेभ्यों, संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

~~~~~~~~~~~~

अक्षत

चाँउर हम तौ नौनें जानै , धो धा कै हम ल्याये है।
मन मौरौ येसौई हौवै , बिनतुआइ खौ आये है॥
सबइ तरा सैं हौय ऊजरै, कृपा सबइँ अब हौ जाबैं।
चरन अपुन के पछया-पछया , गैल मोक्ष की हम पाबैं॥

ॐ हूँ परम पूज्य आचार्य श्री 108 विमर्श सागर जीमहामुनिराज चरण कमलेभ्यों, अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

~~~~~~

पुष्प

लुकलुकात हम भटकत रत हैं , कामी कीरा से साँसी।
जलत बरत भी भगत रहत हैं , करवाँ तइ पूरी हाँसी॥
काम कीचाड़े में ना परबै , रस चेतन फरै बराई।
~~~~~~

जिये चखत हम सब पा जाये, गुरु जैसी ही प्रभुताई ||

ॐ ह्रूँ परम पूज्य आचार्य श्री 108 विमर्श सागर जी महामुनिराज चरण कमलेभ्यो, कामबाण विनाशनाय पुष्प निर्वपामीति स्वाहा।

~~~~~~

नैवेद्य

कितनउँ हम खा पी लै साँसउँ, भूक मिटत फिर भी नइयाँ।
नर खौ भरतइ जितनौ- जितनौ, उतनइँ बढ़तइ टुइयाँ- टुइयाँ ||
मिट जाबै जा भूख मोइ अब, धरी इतइँ जा रै जाबै।
गुरु चरनन में बिनतुआइ है, जा मौखौं नईं सताबै ||

ॐ ह्रूँ परम पूज्य आचार्य श्री 108 विमर्श सागर जी महामुनिराज चरणकमलेभ्यो, क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

~~~~~~~~~~

दीप

दिया न चिंगीं जी में जलतइ, अँदयारौ नीचट राखैं।
तौरो मौरो मोह भरौ है, लगत मुँदी हैं सब आखैं ||
दिया जला कै धरतइ चरनन, गैल मोक्ष की दिख जाबै।
गुरु विमर्श जी कृपा राखियौ, ज्ञान कभउँ ना धुँधलाबै ||

ॐ ह्रूँ परम पूज्य आचार्य श्री 108 विमर्श सागर जीमहामुनिराज चरण कमलेभ्यो, महा मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

~~~~~~

धूप

इतनौ कूरा धरै जिया में, काँतक गुरुवर बतलाबैं।
सौचत रत है कैसे ई खौं, नाँय माँय हम सरकाबैं ||
धूप चढ़ा रय गुरू चरन में, पाप करम सब जर जाबै।
दोष न कौनउँ भीतर राबै, मनुआँ मोरौ हरसाबै ||

ॐ ह्रूँ परम पूज्य आचार्य श्री 108 विमर्श सागर जी महामुनिराज चरण कमलेभ्यो, अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

~~~~~~~~~~~~

फल

खटुआ फल मन के भीतर ही, फूलौ - फूलौ ही राबै।
करिया रस है जीकै भीतर, नाँय - माँय ढुरकत जाबै ||
गुरु विमर्श से बिनतुआइ है, अब तो फल होय गुरीरौ।
होय मोक्ष को साजौ नोंनौं, फल लगबै हमें कुरीरौ ||

ॐ ह्रूँ परम पूज्य आचार्य श्री 108 विमर्श सागर जी महामुनिराज चरण कमलेभ्यो, महा मोक्ष फल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

~~~~~~~~~

अर्घ्य

सबइ भाव हम करें इकठ्ठे, एक जगाँ पर है जौरे।
अरघा जीखौ कात इतै है, जीमें है भरे निहौरे ||
अक्षय साता मोखौ मिलबै, अब सबरै पाप नसाबै।
गुरु विमर्श जू कृपा दीजियौ, मुक्ती मोखौ मिल जाबै ||
~~~~~~~~~

ॐ ह्रूँ परम पूज्य आचार्य श्री 108 विमर्श सागर जी महामुनिराज चरण कमलेभ्यो, अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

~~~~

जयमाला

जै जै भूम जतारा हो गइ, धन्य नगाइच है कुलिया।
जनम लओ जब खुद खौ तरबै, सबरन नै भी नेह दिया॥
मात भगवती पिता सनत ने, लैं कैयाँ है पुचकारौ।
बूड़ी दादी के हाथन कौ, रवँ है कुछ भौत सहारौ॥

समय सटक कै आँगूँ जाबै, दिखै खाल पै जब लाली।
जा कौ जानत तौ है यह, आतम हित की उजयाली॥
धरौ नाम राकेश हतौ तौ, गुरु विराग ने जब परखौ।
तनक बात भइ जब कल्यानी,छौड़ दऔ तब निज घर खौ॥

कहै जिनागम पंथ सुहाना, हित आतम कौ हैं करते।
जीवन है पानू की बूँदें, सूदी साँची ही कहते॥
कातै है आचार्य गुरू जी, रओ धर्म में सब प्रानी।
सबखौ दे आशीष सुभाषा, बौलत मीठी है वानी॥

ॐ ह्रूँ परम पूज्य आचार्य श्री 108 विमर्श सागर जी महामुनिराज चरण कमलेभ्यो, अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

बुंदेली पूजा लेखक - सुभाष सिंघई
जतारा (टीकमगढ़) म०प्र० 9584710660

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~